स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी-मराठी कविता

संपादक :
प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
सह संपादक :
प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

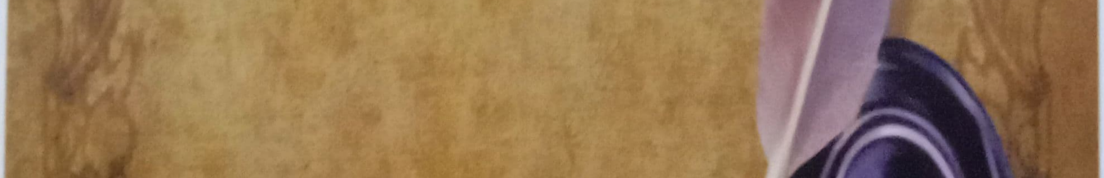

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

पुस्तक : स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी-मराठी कविता
संपादक : प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे,
प्रा. राजेश विभुते
© : संपादक
प्रकाशक : **शैलजा प्रकाशन**
प्रकाशक एवं वितरक
57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर -11
Mob.: 8765061708, 9451022125
E-mail : shailjaprakashan@gmail.com
ISBN : 978-93-80760-97-1
संस्करण : प्रथम 2022
मूल्य : ₹ 725 /-
शब्द साज : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : अनिका डिजिटल, कानपुर

Swadhinta Andolan Aur Hindi-Marathi Kavita

by : Dr. Ranjit Jadhva

Price : Seven Hundred Twenty five Only.

23. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 119
-डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
24. स्वाधीनता आंदोलन के कवि नाथूराम शर्मा शंकर 124
-डॉ. मुरलीधार अच्युतराव लहाडे
25. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 129
-डॉ. संजीव कुमार नरवाडे
26. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 135
- प्रा. बालाजी सूर्यवंशी
27. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय भाव संवेदना 141
-डॉ. सुभाष राठोड
28. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 148
- डॉ. बलवंत बी.एस.
29. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना 151
- प्रा. संतोष शिवराज पवार
30. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 156
- प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
31. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 161
-डॉ. वनिता कुलकर्णी
32. आधुनिक चेतना के विकास में स्वच्छंदतावादी कविता का योगदान 167
-प्रा. डॉ. कदम एस.एस.
33. स्वाधीनता आंदोलन में ग़ज़लकार कैफ़ी आजमी का योगदान 171
(सरमाया के संदर्भ) -डॉ. जहीरुद्दीन र. पठान
34. स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की भूमिका 175
- प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे
35. मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना 182
- डॉ. वडचकर शिवाजी
36. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कविता 188
- डॉ. बालाजी भुरे
37. स्वाधीनता आंदोलन के सजग शिपाही माखनलाल चतुर्वेदी 196
-डॉ. मुकुंद कवडे

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता

प्रा. डॉ. वनिता कुलकर्णी बाबुराव

प्रस्तावना—

हमारी स्वाधीनता महान राष्ट्रीय संग्राम से मिली विजय का प्रतीक है। देश की आजादी के लिये मानवीय मूल्यों के लिए जिन लोगो ने संघर्ष किया उन पर हर भारतीय को नाज है।भारत वर्ष को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने के लिए ही सपूत शूर - वीरोंने अपनी जान की बाजी लगा कर अथवा प्राण हतेली पर रख कर जो-जो अथक प्रयास किए तथा असहनीय यातनाएँ झेली वह सभी इतीहास के पंन्नो में स्वर्ण अक्षरों के साथ आज भी शोभायमान हो रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिंदी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए। राजनीतिक घटनाक्रम बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। आंदोलन के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक हिंदी काव्य संघर्षो से जूझता रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ती तक भिन्न -भिन्न चरणों मे राष्ट्रीय भावनाओंसे ओत-प्रोत कविताओं की कोख मे स्वातंत्र्य चेतना का विकास होता रहा है।

स्वाधीनता आंदोलन से प्रभावित हिंदी कवि —

भारतेंदु हरिश्चंद्र, राधा चरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल, स्नेही, (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, बाल कृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चव्हाण, सियाराम शरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय इत्यादी परंपरागत राष्ट्रीय सांस्कृतिक भित्ति पर ओजपूर्ण स्वरो में राष्ट्रीयता का संधान किया है।

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता—

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे देश मे पुनरूत्थान और राजनैतिक चेतना की लहर तत्कालीन हिंदी कवियों की दासता और करूण दशा से प्रभावित होकर जन जागरण मे अपना सक्रिय योगदान किया। उनका हृदय भारत माँ को दासता की बेडियों से मुक्त करने के लिए उद्वेलित हो उठा। देशवासियों को अतीत का स्वर्णिम वैभव और

(ACS) College
Dist. Parbhani

सांस्कृतिक परंपरा से परिचित कराने का दायित्व निर्वहन तो इन कवियोंने किया ही साथ ही उनमे देशनिष्ठा एंव अस्मिता भी जागृत की। "कवियों ने देश की दुर्दशा पर भी क्षोभ प्रकट कर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष के लिए जनमानस को प्रेरित कर क्रांती की समुचित पृष्ठभूमी तयार की उन्होने अँग्रेजो की कपट- नीति और साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए देशवासियों को आत्म सम्मान के साथ जीने का संदेश दिया।"1

स्वाधीनता आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय जनआंदोलन था जिसमे सभी वर्ग एक साथ शामिल थे। इसका स्वरूप बहुवर्गीय लोकप्रिय और मुक्त था। कुल मिलाकर इस आन्दोलन में अपने विभिन्न रुपों के साथ आधुनिक राजनीति को जनता के समक्ष लाकर खडा किया है।जो वर्ग जाति से परे जनता के हित की हिमायत की बात करती हो। " भारत का स्वतंत्रता संघर्ष " पुस्तक मे बिपिनचंद्र लिखते है- " जन आंदोलन के रूप मे अनेक प्रकार के लोगों की क्षमता प्रतिभा और विभिन्न प्रकार की ऊर्जा का राष्ट्रीय आंदोलन ने प्रयोग किया। इस आंदोलन मे सबके लिये जगह थी। बुढे नौजवान, धनी, गरीब स्त्री- पुरुष, बुद्धिजीवी और आम जनता सब इसमे शामिल थे। इस आंदोलन मे लोगो ने अनेक रूपों मे हिस्सा लेना, हडताल करना, गैर कानूनी करार दी गई पत्र-पत्रिकाएँ और पर्चे बाँटना और पढना राष्ट्रीय नाटक खेलना और देखना, कविताए पढना, उत्सव मनाना और राष्ट्रीय उपन्यास नाटक कहानी और कविता लिखना या पढना प्रभात फेरी निकालना उस्मे गीत गाना आदि आंदोलनों में भाग लेने के ये अलग-अलग रुप थे"। 2 यही कारण था कि लेखकों-कवियों मे एक अलग तरह का ओज तेवर उत्पन्न हुआ, जो उनकी उस समय की रचनाओं मे देखा जा सकता है। मतवाला भिक्षुक कविता मे बलभद्र प्रसाद गुप्त विशारद 'रसिक' लिखते है-

" नमक अदा कर रही
देश के दिवानो की टोली!
सहकर कोमल वक्षस्थल परत बंदूकों की गोली
वे निज हे घोर रमन का चाहे जितना चक्र चलाएँ।
मौत और फाँसी से डरती कही विर आत्माएँ?"3

आजादी के प्रति जुनून कवियों की कविताओं मे दिख रहा था। इन क्रांतिकारी कविताओं का असर था कि तत्कालीन" आंदोलन मे पुरा वर्ग शामील था। हर कोई सीना तान कर गोलियों का सामना करने को तत्पर था। "माता की पुकार" कविता को भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू या अन्य नोजवानों के बलिदान के बीज के रूप मे देखा जा सकता है-

" परतंत्रता के पास मे माता अधीर है।

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist Parbhani

बढकर चुराये उसको कोई ऐसा वीर है?
क्यों मोह मे पडे पडे हो
न किंचित विचार है।।"4

कविवर श्याम लाल गुप्त पार्षद का झंडा गीत स्वतंत्रता सेनानियों के लिए शस्त्र ही बन गया था। -

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।"

स्वाधीनता आन्दोलन में कवियोंने अपनी कविता से लोगो मे देश प्रेम की ऐसी अलख जगाई की लोग घरों से बाहर निकल आये और क्रांतिकारी स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती मे उन्होने लिखा-

" जिसको न निज गौरव तथा निज देश का
अभिमान है। / वह नर नही,नर पशु निरा है और
मृतक समान है।"

बंकिमचंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओतप्रोत गीत 'वंदे मातरम' ने लोगों के रगों मे उबाल ला दिया। अब किसी किमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नही थी।

" वंदे मातरम!
सुजला सुफला मलयज शीतला
शस्य श्यामला मातरम! वंदे मातरम! वंदे मातरम!

स्वतंत्रता यज्ञ में अनेक कावियों ने अपना कर्तव्य अपने कलम से निभाया ये वही कलम के सिपाही की जो दम तोडती मानवता को पुन: जीवित किया। कवियों ने भारतवासियो में भारतीयता, भारतीय गौरव की भावना का सृजन किया है। जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा।' ईकबाल ने ' सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा ' तो सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योती भूमी जय भारत देश' तो बालकृष्ण शर्मा नविन ने 'विप्लव गान' लिखा। स्वाधीनता आंदोलन में कवियो नेजागृती का शंखनाद किया। " विरोधो के स्वर जब फुटते है तो गुंजने के लिए ऊन्हे काव्य के धरातल की जरुरत होती है। स्वरों की जरूरत को लोककवि स्थानीय महाकवि और शायरों ने पुरा किया।" स्वाधीनता आंदोलन मे लोककवियों से लेकर महाकवियों तक के विषय तय थे।

मातृभूमि की वंदना, हुकूमत का विरोध, और शहीद स्तुती कवी जयशंकर प्रसाद लिखते है।

Dist. Parbhani

" हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"

साथही गीतकार कवि प्रदीप ने लिखा "आज हिमालय की चोटी से फिर तुमने ललकारा है।" काकोरी रेल डकैती मे रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खाँ राजेंद्र लाहिडी पकडे गये। बिस्मिल ने फासी पर चढते हुए कहा-

" मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे
बाकी न मै रहू न मेरी आरजू रहे।"

"वंदे मातरम" का उपयोग बलिदान मंत्र की तरह होने लगा। इसे गाते हुए या कहते हुए फांसी पर चढना चलन हो गया था। लोकप्रियता की दृष्टि से "वंदे मातरम" गीत विशिष्ट था।

स्वाधीनता आंदोलन में देश के सभीबुद्धिजिवी किसी न किसी तरह जुडे थे। अधिकांश कवि उस समय आगरा जेल में थे। शैदा अहमद, उस्मान, रघुपती सहाय, कृष्णकांत मालवीय, रामनाथ अशिर और महावीर त्यागी जैसे कवि लेखक,शायर वहाँ कैद मे थे। " देश प्रेम के नियमित मुशायरे आगरा जेल मे होने लगे बाद में 'तराना- ए-कफस' शीर्षक से इन रचनाओं का संग्रह कृष्णकांत मालवीय के संपादकत्व मे प्रकाशित हुआ।" 5

इन सब रचनाओं के बीच "जन गण मन अधिनायक जय हो" (रविंन्द्रनाथ ठाकूर) "वंदे मातरम" (बंकिमचंद्र चटोपाध्याय) और "झंडा वंदन विजयी विश्व तिरंगा प्यारा (श्यामलाल पार्षद) हमारी आन-बान शान का प्रतीक बन गये।

स्वाधीनता आंदोलन मे कवियों ने अपने लेखनी के माध्यम से उस दौर की पिडा तो व्यक्त कि ही है, साथ ही युवाओं को ऊदवेलित करने और ऊनमें मे जोश भरणे का काम भी किया। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों के ओजस्वी उदगारों तथा उनसे मिली प्रेरणा ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक हिंदी कविता के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा-

" अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अती खारी।"
सबके उपर टिक्कस की आफत आई
हा! भारत दुर्दशा देखी ना जाई।"

हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य मे देश प्रेम और स्वतंत्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ती दी है। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता के रूप माखनलाल चतुर्वेदी की हिमकिरीटनी, हिम तरंगिनी, माता युगचरण, समर्पण आदि के काव्य कृतियों के माध्यम से उन की राष्ट्रीय भाव छाया से अवगत हुवा जा सकता है। चतुर्वेदी जी ने भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर जनतंत्रात्मक पद्धती की स्थापना का आवाहन किया। स्वातंत्र्य श्रंखला की कडी मे माखनलाल चतुर्वेदी का नाम राष्ट्रीय गौरव की याद दिलाता है अपितु संघर्ष की प्रबल प्रेरणा भी देता है।जेल की हथकडी आभूषण बन उनके जीवन को अलंकृत करती है।-

"क्या देख न सकती जंजीरों का गहना
हथकडियां क्यों? यह ब्रिटीश राज का गहना"।6

राष्ट्रीय काव्यधारा को विकसित करणे वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का त्रिधारा, मुकुल की 'राखी' 'झांसी की रानी' 'विरों का कैसा हो वसंत' आदि कविताओं मे सक्रिय भूमिका निभाई। आंदोलन के दौरान उन्हे कही बार जेल जाना पडा। 'जलियावाला बाग मे बसंत' कविता मे इस नृशंस हत्याकांड पर कवयित्री के करून कृंदन से उसकी मूक वेदना मूर्तीमान हो उठी है।-

" आओ प्रिय ऋतुराज किंतु धीरे से आना
यह है शोक स्थान, यहाँ मत शोर मचाना
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा- खा कर
कलिया उनके लिये चढाना थोडी सी ला कर।"

इस प्रकार से हिंदी कवीयों ने स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी राष्ट्रीय जागरण की अलख जगाई है। राष्ट्रकवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी ने भारतीय युवाओं को स्वातंत्र्य ध्वज सुरक्षित रखने का आवाहन करते हुए लिखा-

" शुभारंभ जो किया देश मे, नवचेतना आई है। मुरदा प्राणों मे फिर से, छायी नवीन तरुणाई है। स्वतंत्रता की ध्वजा न झुके यही ध्रुव ध्यान करो। बढो दे के युवक-युवतीयों आज पुण्य प्रस्थान करो।" 7

सारांश —

स्वाधीनता आंदोलन के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ती तक हिंदी काव्य संघर्षो से जुझता रहा स्वाधीनता के पश्चात राष्ट्रीय कविता के इतिहास का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। नये निर्माण के स्वर और भविष्य के प्रति मंगलमय कल्पना उनके काव्य का विषय बन गया। भारत का ऐतिहासिक क्षितिज उनकी कीर्ति किरण से सदा आलोकित रहेगा

Dist. Parbhani (ACS) College

और उनकी कवितायएँ राष्ट्रीय अस्मिता की धरोहर बनकर नई पिढी को अपने गौरव गीत के ओजस्वी स्वर सुनाती रहेगी। इस प्रकार से हिंदी कवियों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के समय देश में मची उथल-पुथल को अपनी कविता का विषय बनाकर साहित्य के क्षेत्र में अपने दायित्व का निर्वहन किया, वे स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए एक और राष्ट्रीय भावों के विषय के रूप मे प्रतिष्ठित कर रहे थे। वही दुसरी और राष्ट्रीय चेतना को उसके चरम पर पहुँचा रहे थे। वे तत्कालीन घटनाओं के प्रति सजग तो थे ही साथ ही साथ भारत के गौरवमयी इतिहास के साथ भी कदम मिलाकर चल रहे थे।

संदर्भ—

(1) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे हिंदी कवियों का योगदान – डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी- संपादकीय पृष्ठ से

(2) भारत का स्वतंत्रता संघर्ष - बिपिन चंद्र - भूमिका पृष्ठ से

(3) प्रतिबंधित हिंदी साहित्य -संपादक - रुस्तम राय - पृष्ठ 15

(4) प्रतिबंधित हिंदी साहित्य- संपादक-रुस्तम राय -पृष्ठ 104

(5) https:www.livehindustan.com>news (6) कैदी और कोकिला - माखनलाल चतुर्वेदी

(7) https:// www.rajasthanhistory.com>...

हिंदी विभागाध्यक्षा

कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ.

ता.सोनपेठ जि. परभणी पिन कोड अरे 431516

दूरभाष -94 2313 8878,

मेल-kulkarnivanita02@gmail.com

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL

Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani